जवाहर नवोदय विद्यालय खूंटी

नाम - सौनम कुमारी
कक्षा - सप्तम 'अ'
क्रमांक - I

मेरे जीवन का लक्ष्य

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चे को पढ़ा लिखाकर योग्य बनाना चाहते हैं। माता पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे का भविष्य उज्जवल हो। प्रत्येक बच्चे सोचते हैं कि वे क्या बनेगा मैं भी अपने भविष्य के बारे मे सोचती हूँ कि मैं क्या बनूंगी। मैं बड़ी होकर अध्यापिका बनना चाहती हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य है ऐसा होना चाहिए जिससे अपना भविष्य तो सुंदर बने ही लेकिन औरो का भी उससे भला हो। मेरी दृष्टि मे अध्यापिका ही ऐसा पद है जो स्वयं तो सम्मान पूर्वक जीवन जीते हैं और दूसरो के जीवन को भी महान बना देते हैं।

अध्यापक का जीवन महान है। वह सदा जीवन और उच्च विचार के सहारे जीवन के आदर्श को स्थापित करते हैं। समाज मे उसका विशेष स्थान है गुरु का हर व्यक्ति सम्मान करते हैं। गुरु का स्थर माता पिता से भी ज्यादा होता है एक विद्यार्थी के लिए।

अध्यापक का सारा जीवन दूसरो के भविष्य सुधारने मे लगा रहता है। यद्यपि एक अध्यापक का जीवन ऐशो-आराम मे नही बीतता, वह थोड़े आय मे अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं, तो भी समाज मे उसका आदर बना रहता है। उसके ज्ञान और विद्वता के मूल्य को रुपय-पैसो में नही आँका जा सकता।

संसार मे कोई भी व्यक्ति ऐसा नही है, जो बिना अध्यापक के संपर्क मे आगे बढ़ा हो। समाज मे अध्यापक का उत्तरदायित्व सबसे अधिक होता है। उसके पास हर बालक अज्ञानी बनकर जाता है और अध्यापक उसे ज्ञानी बना देता है। एक आदर्श अध्यापक

मैं अध्यापिका बनकर सबके जीवन को उजाला से भर देना चाहती हूँ। उन्हें ज्ञान देकर उनके जीवन को सवारना चाहती हूँ। मैं उन्हें इस प्रकार ज्ञान से सजाऊंगी कि उन्हें कभी भी किसी के सामने लज्जित नहीं होना पड़ेगा। मैं सभी विद्यार्थी को अपनी शिक्षा से सफलता तक पहुंचाना चाहती हूँ।